[redacted]

.ी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 72 अंक : 36
सृष्टि संवत् 1960853116
6 दिसम्बर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 36, 3/6 दिसम्बर 2015 तदनुसार 21 मार्गशीर्ष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

कहां भगवान् ? किसने उसे देखा ?

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति।
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि एवाम।।
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि।।

–ऋ ८।१००।३–४

शब्दार्थ–यदि–यदि **सत्यम्**=सचमुच **अस्ति**=भगवान् है तो **वाजयन्तः** = ज्ञानाभिलाषी, बलाभिलाषी होते हुए तुम उस **इन्द्राय**= इन्द्र के लिए **सत्यम्**=सच्चा **स्तोमम्**=स्तोत्र **प्र**=अत्यन्त **सु**=उत्तम रीति से **भरत**=धारण करो। **नेमः+त्वः+उ+आह** = कोई एक तो कहता है–**इन्द्रः** = इन्द्र **न+अस्ति+इति** = नहीं हैं। **ईम्** = उसको **कः** = किसने **ददर्श**–देखा है ? **कम्** = किसकी **अभि+स्तवाम्**= हम स्तुति करें ?

भगवान् इसका समाधान करते हैं–हे **जरितः** = स्तोतः ! **अयम्=अस्मि**= यह मैं हूँ, **मा**= मुझे **इह**= यहीं **पश्य** = देख। **मैं मह्ना**=महत्त्व के कारण **विश्वा**=सम्पूर्ण **जातानि**=उत्पन्न पदार्थों को **अभि+अस्मि** = अभिभूत करता हूँ। **ऋतस्य** = ऋत के **प्रदिशः** = उपदेशक **मा**= मेरी **वर्धयन्ति** = बड़ाई करते हैं। मैं **आदर्दिरः** = विदीर्ण करनेवाला, विनाश करने वाला **भुवना** = संसारों को **दर्दरीमि** = पनः–पुनः विनाश करता हूँ।

व्याख्या–यदि तुम्हें भगवान् पर आस्था है तो उसकी सच्ची, हृदय के अन्तस्तल से निकली हुई स्तुति करो। तुम्हारी स्तुति से भगवान् को कोई लाभ नहीं, तुम्हें ही लाभ है, किन्तु किसी ने संशय डाल दिया कि क्या परमेश्वर–परमेश्वर चिल्ला रहे हो ? वह है ही नहीं। जब वह है ही नहीं तो–**'कमभिष्टवाम'** = किसकी स्तुति करें ? उसे 'क ईं ददर्श' = किसने देखा है ? लाखों इन्द्रियागोचर पदार्थों को मानकर दिन–रात अपना कार्य चलाने वाला कहता है–**'क ईं ददर्श कमभिष्टवाम'** = उसे किसने देखा है ? किसकी स्तुति करें ? योग के विघ्नों में 'संशय' बड़ा भारी विघ्न है। जैसा योगसूत्र है–**'व्याधिस्त्यानसंशय......'** (१।३०) व्याधि = रोग, स्त्यान = भारीपन, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति = योगसाधनों में प्रीति का न होना, भ्रान्तिदर्शन, योगभूमिका प्राप्त न होना, चित्त की चंचलता, ये योग के विघ्न हैं। संशय में पड़कर अपनी पूजापद्धति को तिलाञ्जलि देने को भक्त तैयार हुआ कि आत्मा के अन्दर बैठा आत्मा का आत्मा, अन्तरात्मा परमात्मा कहता है–**'अयमस्मि जरितः'** = भक्त ! यह मैं हूँ। तू मुझे खोजता है, देख नहीं पाता है। मत इधर–उधर भटक, वरन् **'पश्य मेह'** = मुझे यहीं देख। अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो तेरा अन्तर्यामी आत्मा हूँ। तेरे आत्मा के अन्दर बैठा हूँ। बाहर की ओर से आँख मूँद, अन्दर की खोल। फिर तू मुझे अपने में देखेगा। मेरा सामर्थ्य जानना चाहता है ? मैंने–**'विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना'** = अपने बल–सामर्थ्य से समस्त संसार को दबा रखा है। समस्त जगत् मेरे संकेत पर चलता है। तू चाहे मेरी पूजा कर या न कर, किन्तु **'ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति'** = ऋत के = अबाध्य सृष्टि–नियम के उपदेशक मेरी बड़ाई करते हैं।

मूर्ख भले ही भगवान् का चिन्तन–स्मरण–ध्यान न करें, किन्तु जो कार्यकारणरूप ऋत के प्रचारक हैं, वे देखते हैं कि कारण बिना कार्य नहीं हो सकता। कारणों में यदि कर्त्ता न हो तो कार्य की उत्पत्ति किसी भाँति नहीं हो सकती।

छोटा–सा पदार्थ चेतन के बिना नहीं बन सकता तो इतना महान् जहान चेतनावान् के बिना कैसे बन सकता है ? इस ऋत को समझकर वे तो भगवान् की पूजा करते हैं और लोगों से भी कहते हैं–'प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत' [ऋ० ८।८९।३] = तुम अपने बड़े इन्द्र की वेद से पूजा करो। भगवान् की शक्ति–उत्पादक शक्ति–प्रत्यक्ष नहीं है। उसका अनुमान से ज्ञान होता है। उसकी पालन–शक्ति भी व्यक्त नहीं है। उसका भान भी अनुमान–प्रमाण कराता है, परन्तु जब विनाश देखते हैं तो चुपचाप किसी महती शक्ति की भक्ति करने पर तत्पर हो जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वर्ष 2016 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2016 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

–प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

वेद परमेश्वर का नित्य ज्ञान है

-ले० श्री बलदेव राज कालिया 324, मॉडल कॉलोनी, यमुनानगर

वेद परिचय-वेद भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व है। वैदिक समाज के सभी सम्प्रदाय एक मत हैं कि भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म, आचार-विचार, रीति-नीति, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी वेद ज्ञान से अनुप्राणित है। जीवन और साहित्य की कोई विद्या ऐसी नहीं है, जिस का बीज तत्व वेदों में न मिलता हो। समष्टि रूप से समग्र आर्य संस्कृति, लोक व्यवहार एवं सभ्यता की आधार भूमि यदि वेदों में तलाशी जाये तो नि-संदेह वहीं मिलेगी।

वेद का अर्थ है विद्या अर्थात् ज्ञान और ज्ञान वह जो प्रकाश है जो मनुष्य के मन-मतिष्क में छाये हुए अंधकार अज्ञान को दूर करके एक दिव्य आलोक का प्रसार करता है। सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही अंधकार मय पथ की यात्रा पर निकले बुद्धि-विवेक सम्पन्न मानव के मार्ग दर्शन के लिए जो ज्ञान ज्योति परमेश्वर ने प्रकाशित की, उसी का नाम 'वेद' है।

वेद को विद्या या ज्ञान के अर्थ में लेने वाले विद्वान वेद संहिता, ब्राह्मण ग्रन्थ, उप-वेद एवं वेदांग आदि इन सब को वेद ही मानते थे। तत्पश्चात् संहिता भाग (वेद मन्त्र) और ब्याख्या भाग (ब्राह्मण ग्रन्थ) के अतिरिक्त सब ग्रन्थों को वेद परिधि से बाहर कर दिया गया क्योंकि वे वेद वाणी से असम्बद्ध थे।

नवीन सोच के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद श्रेणी से बाहर रखा गया है क्योंकि ब्राह्मण ग्रन्थ ईश्वरीय न होकर ऋषियों द्वारा, वेद मन्त्रों की व्याख्या के रूप में लिखे गए हैं। अत: इन्हें ईश्वरीय ज्ञान मानने का कोई औचित्य नहीं है।

अन्तत: केवल ईश्वरोक्त संहिता भाग (वेद मन्त्र) को ही वेद माना गया है। मेरी दृष्टि में भी यह निर्णय युक्ति संगत है।

अत: वेद ग्रन्थ केवल चार हैं।

1. ऋग्वेद (ज्ञान काण्ड) 2. यजुर्वेद (कर्म काण्ड) 3. अथर्ववेद (विज्ञान काण्ड) 4. सामवेद (उपासना काण्ड)

मनु महाराज वेदों की स्तुति करते हुए लिखते हैं:

(क) ''वेदोऽलिखो धर्म-मूलम।'' अर्थात् वेदों में सब धर्मों का मूल है।

(ख) ''वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तप: परमिहोच्यते।''अर्थात् विप्र के लिए वेद का अभ्यास ही श्रेष्ठ तप है।

(ग) ''चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाश्चत्वारश्या श्रमा पृथक। भूतं-भव्यं-भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति।।'' अर्थात् चारों वर्णों, तीनों लोकों, चारों, आश्रमों, भूत, वर्तमान और भविष्य इन सबका परिज्ञान वेद से होता है।

वेद, ईश्वरीय ज्ञान-1. जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है उसी से ऋग्वेद यजुर्वेद, अथर्ववेद, और सामवेद, यह चारों उत्पन्न हुए हैं। अथर्ववेद में रूपकालंकार से वेदों की उत्पत्ति पर प्रकाश ईश्वर स्वयं डालते हैं-

यस्मादृचो अपातक्षन यजुर्यस्माद्पाकषेन्। सामानि यस्य लोगान्यथर्वांगिरसो मुखम् सकम्भं तं ब्रूहि कतम: स्विदेव स:।। (अथर्व० का० 101 प्रपा 23) अनु प मं० 20

अर्थात् अथर्ववेद मेरे मुख के समतुल्य, सामवेद लोगों के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण की नाईं है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

2. ''एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य नि:श्वसिमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेद : सामवेदोऽथर्वांगिरस:'' इत्यादि।

याज्ञवल्क्य अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयी ! जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है उस से ही ऋक्, यजु: साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर में से श्वास बाहर आकर फिर भीतर को जाता है, उसी प्रकार सृष्टि के आदि में परमेश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं। यह बीजांकुरवत् होता है। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्ष रूप होकर फिर भी बीज के भीतर रहता है। इसी प्रकार वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं। इनका कभी नाश नहीं होता, क्योंकि वे ईश्वर की विद्या हैं। इसलिए इनको नित्य ही जानना। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

3. वेद सनातन सत्य है। इसका सामर्थ्य भी बहुत बड़ा है। इसी कारण इनके प्रति विदेशों में भी श्रद्धा पनप रही है। जर्मन देश के लोग वेदों का अवलोकन कर उनकी कीर्ति और गुणानुवाद गा रहे हैं। इसी तरह सब देशों के विद्वानों के मन का आकर्षण वेद के सत्य के सामर्थ्य से हो रहा है। सारांश यह है कि सत्यता, एकवाक्यता, सुगम रचना, भाषा लावण्य, निष्पक्षता, सर्वविद्या मूलकत्व के गुण वेदों में ही केवल सम्भव है। इसी से वेद ईश्वर प्रणीत हैं। (महर्षि दयानन्द-पूना-प्रवचन)

4. महर्षि देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वेदों के ईश्वरोक्त होने के कई प्रमाण दिए है।

(क) ईश्वर पवित्र, सर्वविद्याविद्, शुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव-न्यायकारी-दयालु आदि गुणों वाला है। वेदों में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल कथन होने से वेद ईश्वरोक्त हैं।

(ख) वेदों में सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तों और पवित्रात्माओं के व्यवहार के विरुद्ध कोई कथन नहीं है अत: वेद ईश्वर कृत माने जाने चाहिए।

(ग) वेदों में ईश्वर, सृष्टि, कार्य-कारण सिद्धान्त और जीव, इन सब का प्रतिपादन ईश्वर के निर्भ्रम ज्ञान के अनुरूप ही किया गया है। इसलिए वेद ईश्वरीय ज्ञान है।

5. वेदों का एक-एक मन्त्र अनन्त काल से आप्त विद्वानों का मार्ग प्रशस्त करता आ रहा है। वेद मन्त्र आज भी उतने ही सत्य है जितने अरब्रों वर्ष पूर्व अपने प्रकाश के समय थे। इन में कोई नकारात्मक भाव नहीं। जीव मात्र के उपकार के उपदेश हैं। वेद किसी व्यक्ति, जाति या प्रदेश के हितार्थ नहीं प्रत्युत सर्व सृष्टि के कल्याण का ही पथ प्रशस्त करते हैं।

अत: वेद सार्वजनीन, सर्वकालिक और सार्वदेशीय होने के कारण अद्वितीय और ईश्वर कृत हैं।

6. वेदों में ज्ञान-विज्ञान की सब विद्याओं के मूल-सूत्र बड़े निर्भ्रान्त ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं। वेदों में धर्म, संस्कृति, राजनीति, गणित ज्योतिष, कल्याण, वैद्यक ज्ञान, सृष्टोत्पत्ति, धारण और प्रलय, आत्मा, परमात्मा, कर्मफल आदि गूढ़ विषयों का प्रतिपादन मूल रूप में मिलता है। इतना ज्ञान मानवीय सामर्थ्य से परे है। बड़े से बड़ा विद्वान भी केवल अपने रुचि के एक-दो विषयों पर ग्रन्थ रच सकता है। वह भी सर्वमान्य कदाचित् ही होते हैं। सृष्टि और जीव सम्बन्धी हर विषय पर लिखना मानव सामर्थ्य से परे है। अत: वेद अवश्य ही ईश्वर कृत हैं।

वेदों का नित्यत्व:

7. सभी दर्शनों के ऋषियों ने वेदों की उत्पत्ति ईश्वर से मानी है और उन्हें नियम माना है। नीचे कुछ ऋषियों के इस सम्बन्ध में विचार दिए जा रहे हैं।

(क) वैशेषिक दर्शन के कणाद मुनि लिखते है, ''वेद ईश्वरोक्त हैं''। इन में सत्य विद्या और पक्षपात रहित धर्म का ही प्रतिपादन है। इसी से चारों वेद नित्य हैं, ऐसा ही सब मनुष्यों को मानना उचित है। चूंकि ईश्वर नित्य है इसलिए उसकी विद्या भी नित्य है।''

(ख) सांख्य दर्शन के कपिलाचार्य कहते हैं। ''परमेश्वर की स्वाभाविक जो विद्या शक्ति है उससे प्रकट होने के कारण वेदों का नित्यत्व और स्वत: प्रामाण्य सब मनुष्यों को स्वीकारना चाहिए।''

(ग) योग दर्शन के कर्ता पातञ्जलि मुनि भी वेदों को ईश्वरोक्त और नित्य मानते हैं। उन्होंने लिखा है, ''वेद द्वारा सत्यार्थों का उपदेश करने से ईश्वर का नाम गुरु है। उस के अनन्त ज्ञान विज्ञान सर्वदा एकरस बना रहता है। उसी के रचे वेदों का सत्यार्थपना और नित्यपना भी निश्चित है ऐसा ही सब मनुष्यों को जानना चाहिए।''

(घ) वैसे ही न्याय शास्त्र के गौतम मुनि भी शब्द को नित्य कहते हैं। ''वेदों को नित्य ही मानना चाहिए क्योंकि सृष्टि के आरम्भ से लेके आज पर्यन्त, ब्रह्मादि जितने आप्त होते आए हैं, वे सब वेदों को नित्य ही मानते आए हैं। उन आप्तों का अवश्य ही प्रमाण करना चाहिए।''

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय......

आर्य बाहर से नहीं आए थे

लोकसभा में कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने भारतीय जनता पार्टी के ऊपर आरोप लगाते हुए संसद में यह वक्तव्य दिया है कि आप लोग आर्य हो और आप इस देश के निवासी नहीं हो। आप लोग बाहर से आए हो। कांग्रेस नेता का आर्यों को बाहर का बताना उनकी विकृत मानसिकता को दिखाता है। केवल राजनीतिक स्वार्थ के लिए अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ खिलवाड़ करना कहां तक उचित है। ऐसे मूर्ख नेता जिन्हें अपनी संस्कृति और सभ्यता का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है केवल अपनी पार्टी के नेतृत्व को खुश करने के लिए देश की गरिमा और मान मर्यादा को ठेस पहुंचाते है। ऐसे नेताओं के खिलाफ सख्त कारवाई होनी चाहिए। आज देश में विघटनकारी तत्त्वों द्वारा जातीयता पर आधारित संकीर्ण विचारों को बढ़ावा देकर जनमानस को भ्रमित करने का जो प्रयास किया जा रहा है उसे रोकने के लिए आवश्यक है कि हम अपने भारत देश और उसकी सभ्यता के अतीत का सही मूल्यांकन करें। आज भारत की एकता व अखण्डता तथा उसकी अनेकविध समस्याओं के समाधान में सबसे बड़ी बाधा आर्यों के विदेशी कहे जाने की मिथ्या धारणा है। आश्चर्य और दुःख की बात तो यह है कि देश के स्वतन्त्र होने के इतने वर्षों बाद भी हम इन्हीं मिथ्या कल्पनाओं में जी रहे है। इन सब भ्रान्तियों को दूर करने के लिए स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने आर्यो का आदिदेश और उनकी सभ्यता नामक पुस्तक में इस विषय पर गहराई से चिन्तन किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्य इसी देश के मूल निवासी थे। उन्होंने यह भी सिद्ध किया है कि किस प्रकार हमारे इतिहास को नष्ट करके हमें सुनियोजित तरीके से आक्रमणकारी सिद्ध किया। उसी पुस्तक में से कुछ अंश इस लेख में प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिसमें हमारे इतिहास के स्वरूप को बिगाड़ा गया और आर्यो को विदेशी सिद्ध किया गया।

जिस इतिहास को हम आज भारत का इतिहास मानते हैं, वह एक विशेष उद्देश्य को लेकर योजनाबद्ध रूप से ऑक्सफोर्ड के विद्वानों का रचा हुआ इतिहास है। भारतीयों का उद्धार करने की आड़ में अपने साम्राज्य का निर्माण करना उनका लक्ष्य था। ईसाइयत के प्रचार से भारत का उद्धार करने के उत्सुक अंग्रेजों के लिए यह सिद्ध करना जरूरी था कि भारत के लोग सदा से बर्बर और असभ्य रहे हैं। कारण? यदि उन्हें सभ्य मान लिया जाए तो उन्हें सभ्य बनाने का दावा कैसे करते? 1757 में प्लासी की लड़ाई में सफलता प्राप्त करने के कुछ ही दिन बाद लॉर्ड मैकाले ने अपने मित्र मिस्टर राउस को लिखा था- अब केवल नाममात्र नहीं हमें सचमुच नबाव बनना है और वह भी कोई पर्दा रखकर नहीं, खुल्लमखुल्ला बनना है। इसी योजना के अन्तर्गत 1899 में आर्थर ए. मैकडानल ने संस्कृत साहित्य का इतिहास लिखा। उसके कुछ अंश यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिसमें उन्होंने आर्यों को आक्रमणकारी बताया है- 1. आर्यों के आक्रमण के बाद बड़ी तेजी से आर्यसभ्यता ने भारत उपखण्ड में एक अनोखा विस्तार कर लिया। 2. भारतीयों ने इतिहास लिखे ही नहीं, क्योंकि उन्होंने कोई ऐतिहासिक कार्य किया नहीं किया। 3. भारत पर प्रथम आक्रमण पश्चिम से आर्यों ने किया। वे पश्चिमोत्तरी घाटियों पर उतरे जहाँ भारत की समतल भूमि पर सदा से आक्रमणों की लहरें आती रहीं। 4. इतिहासपूर्व काल में जिन आर्यों ने भारत को जीता था वे स्वयं पुराने समय से बाहरी आक्रमणों का शिकार होते चले आए थे।

इस प्रकार इस इतिहास का सार संक्षेप यह है कि भारत सदा से हारने वाला देश रहा है। इतिहास झूठ होते हुए भी हमने अपनी मानसिक दासता के कारण आंग्लवाक्यं प्रमाणम् के अनुसार स्वीकार किया हुआ है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद में आए आर्य तथा दस्यु शब्द भिन्न-भिन्न जातियों के बोधक हैं। उनका कहना है कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी ही नहीं थे। वास्तव में आर्य शब्द किसी जाति का बोधक न होकर गुणवाचक है। जिस भाषा और साहित्य से आर्य शब्द लिया गया है और जिस संस्कृति में इसका प्रचुरता से प्रयोग हुआ है, उसमें कहीं भी इसका प्रयोग जाति के अर्थ में नहीं मिलता। ऋग्वेद में कहा गया है कि आर्य वे कहलाते हैं जो धरती पर सत्य, अहिंसा, पवित्रता, परोपकार आदि व्रतों को विशेष रूप से धारण करते हैं। जो कर्त्तव्य कर्मों का सदा आचरण करता है और अकर्त्तव्य कर्मो अर्थात् पापों से दूर रहता है, वह आर्य कहलाता है। हमारी संस्कृति में रामायण काल से आर्य शब्द का प्रयोग होता आया है। श्रीराम के आर्यत्व का परिचय देते हुए बाल्मीकि रामायण में लिखा है कि श्रीराम चन्द्र की तरह प्रियदर्शन तथा सबको समान दृष्टि से देखने वाले पहले आर्य थे। आर्य के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति ज्ञानी हो, सदा सन्तुष्ट रहने वाला हो, मन को सदा वश में रखने वाला हो, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानी, दयालु और नम्र हो, वह आर्य कहलाता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में कहीं पर भी आर्य शब्द का प्रयोग जाति के लिए नहीं हुआ है। महाभारत में भी श्रीकृष्ण में जब देखा कि अर्जुन वीर होकर भी मोहवश क्षात्रधर्म के आदर्श से च्युत हो रहा है तो उन्होंने अर्जुन के व्यवहार को अनार्यजुष्टम कहकर उसकी भर्त्सना की। महात्मा बुद्ध ने भी सज्जनों के लिए सर्वत्र आर्य शब्द का प्रयोग करते हुए उसका लक्षण इस प्रकार किया है-

न तेन अरियो होति येन पाणानि हिंसति।
अहिंसा सबपाणानं अरियोति पवुच्चति।।

अर्थात् प्राणियों की हिंसा करने वाला आर्य नहीं होता। सब प्राणियों के प्रति अहिंसाभाव रखने वाला आर्य होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए श्री अरविन्द ने आर्य शब्द के अर्थ और महत्व के सम्बन्ध में लिखा है- आर्य शब्द में उदारता, नम्रता, श्रेष्ठता, साहस, सरलता, पवित्रता, दया, ज्ञान के लिए उत्सुकता, कर्त्तव्य पालनादि सब उत्तम गुणों का समावेश है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 में सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था-किसी संस्कृत ग्रन्थ वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों से लड़कर, विजय पाकर, उन्हें निकाल कर इस देश के राजा हुए।

निष्कर्ष में यही कहना पड़ेगा कि कहीं बाहर से आकर बस जाने वाली आर्य नाम की कोई जाति ही नहीं है। एक षड्यन्त्र के तहत हमारे इतिहास के साथ छेड़छाड करके आर्यों को आक्रमणकारी और विदेशी सिद्ध किया गया है। हमारी संस्कृति में रामायण काल से लेकर आर्य शब्द का प्रयोग किया गया है। भारतीय विज्ञान वैदिक काल से ही अपनी चरम सीमा पर था। तभी तो रामायण में पुष्पक विमान जैसे आविष्कारों का वर्णन आता है। हमें नीचा दिखाने और अपने आपको श्रेष्ठ दिखाने के लिए विदेशियों ने हमारे इतिहास को बिगाड़ा है। हमारे पूर्वज न तो जंगली थे, न ही असभ्य थे। खेद की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने वर्षों के बाद भी हम विदेशियों की मानसिकता के शिकार हैं। कांग्रेस जैसी राजनीतिक पार्टियां अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए आज भी अपने पूर्वजों को बदनाम कर रही हैं। अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। मल्लिार्जुन खड़गे जैसा व्यक्ति जिसे अपनी संस्कृति, सभ्यता के बारे में कुछ भी पता नहीं केवल अपनी पार्टी नेतृत्व को खुश करने के लिए इस तरह का आधारहीन वक्तव्य संसद में देता है। इस कुकृत्य के लिए उसे देश की जनता से माफी मांगनी चाहिए और अपनी भूल को स्वीकार करना चाहिए।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

गुरु शिष्य सदा सत्योपदेश करें

-ले० अशोक आर्य, 104 शिप्रा अपार्टमैंट, कौशाम्बी

आज का विद्यार्थी उच्छ्रिन्खल है किन्तु प्राचीन काल का वेदाधारित शिक्षा पाने वाला विद्यार्थी पूर्णतया सदाचारी होता था। इस का कारण आज की तथा प्राचीन शिक्षा पद्धति का अंतर है। प्राचीन काल का विद्यार्थी शिक्षा काल में निरंतर गुरु चरणों में रहते हुए शिक्षा प्राप्त करता था किन्तु आज का छात्र केवल कुछ घंटों के लिए स्कूल जाता है और विभिन्न विषयों के विभिन्न अध्यापक होने के कारण एक अध्यापक के संपर्क में केवल पैंतालीस मिन्ट के लिए ही आता है। इस कारण जहां प्राचीन काल का विद्यार्थी अपने गुरु के आचार विचार तथा व्यवहार को पूर्णतया समझ कर उसमें से सुगुण को अपने जीवन का भाग बनाने का प्रयास करता था, वहां आज का विद्यार्थी अपने अध्यापक के अतिरिक्त और भी अनेक साधनों से अपने आचार विचार को बनाते हैं। यथा माता-पिता, परिजन, गली मोहल्ले के लोग, राजनेता, धर्म चलभाष, दूरभाष, धर्मपुरुष, अपने खेल, सिनेमा, दूरदर्शन आदि आज इस प्रकार के अनेक अन्य साधन बन गए हैं, जिनको देख कर, सुनकर, उसका व्यवहार, उसका आचरण निर्धारित होता है। यह सब उसके निर्माण में अपना भाग जोड़ते हैं क्योंकि अधिकांशतया बुरे आचरण ही उसे दिखाई देते हैं। इस कारण उसका आचरण भी बुराई की ओर झुकता चला जाता है। प्राचीन गुरु तो स्वयं ही विद्यार्थी को सदाचारी बनाने का यत्न करते थे। यह बात निरुक्त में भी इस प्रकार बताई गई है :

या मात्रिमत्यवितथेन कर्नाविदुः सं कुर्वन्नमत् उपयाच्छन्।

तं मन्येत पितरं मातरं च तं द्रुयेत कतमच्चनाह।। यास्काचार्य कृत निरुक्त।।

इस निरुक्त के माध्यम से यास्काचार्य जी वेद का ही सन्देश दे रहे हैं। यास्काचार्य जी सन्देश, उपदेश देते हुए कह रहे हैं कि जो गुरु सत्य भाषण से अपने शिष्य के कानों को तृप्त कर देता है। इस पंक्ति के माध्यम से सत्य पर बल दिया गया है। आज के युग में सत्य को कड़वा कहा जाता है। जब कोई किसी के आचरण के किसी के व्यवहार के सम्बन्ध में कोई सत्य बात कहता है तो, यह बात उसे कड़वी लगती है।

आगंतुक इस सत्य व्यवहार को कटु वचन मानता है और इस सत्य के कारण अनेक प्रकार के मन मुटाव तथा लड़ाई झगड़े भी हो जाते हैं किन्तु प्राचीन काल में सत्य की ही स्तुति होती थी तथा सत्य वक्ता का बहुत आदर मान और सम्मान होता था। सब लोग सत्य बोलते थे तथा अपना व्यवहार, अपने आचार, अपने विचार भी सत्य को केंद्र बना कर ही करते थे। इस का ही परिणाम था कि गुरु जन इस प्रकार का सत्य भाषण करते थे जो कानों को तृप्त कर देता था। विद्यार्थी कानों की इस तृप्ति के लिए सदा उत्सुक रहते हुए गुरु को निहारते रहते थे।

इतना ही नहीं गुरु के यह सत्य वचन शिष्य के सुख का कारण होते थे। उस युग के गुरु जहां सत्य वचन बोलते थे, वहां उस काल के विद्यार्थी भी सत्य ही सुनना पसंद करते थे। सत्य सुनने में वह सुख का अनुभव करते थे। सत्य वचनों से उन्हें सुख मिलता था। हम जानते हैं कि झूठ के, बुरे आचरण के,. गंदे व्यवहार के पंख नहीं होते। यह दुष्टाचरण एक दिन स्पष्ट दिखाई दे ही जाता है। एक दिन झूठ की पोल खुल ही जाती है। सत्य सामने आ ही जाता है। जब सत्य सामने आता है तो झूठ बोलने वाले के लिए मन से सम्मान समाप्त हो जाता है। उसके इस गंदे व्यवहार से आगंतुक को जो दु:ख होता है, जो कष्ट होता है, यह कष्ट उसके आचरण को भी बुरा बना देता है। इससे ही कलह-क्लेश तथा लड़ाई-झगड़ों का जन्म होता है, जो कष्ट का कारण बनते हैं। यदि सत्याचरण किया गया होता तो हो सकता है कुछ क्षणों के लिए आगंतुक को कष्ट अनुभव होता किन्तु लम्बे काल के लिए इस व्यवहार का प्रभाव सामने आता और जिसे यह- सत्य वचन कहे गए हैं वह सुख का अनुभव करता। इसलिए यास्काचार्य जी कह रहे हैं कि सत्याचरण से, सत्य व्यवहार से, सत्योपदेश से शिष्य को सुख की प्राप्ति होती है।

यास्काचार्य जी आगे बता रहे हैं कि सत्याचरण शिष्य को अमृत प्रदान करता है। जब सत्य से प्रेम बढ़ता है, भाईचारा बढ़ता है, सुखों की वृद्धि होती है। जब हम सुखी होते हैं तो इस सुख के कारण हमें जो लड़ाई झगड़ों में समय और शक्ति नष्ट करनी थी, वह बच जाती है। अब यह बचा हुआ समय निर्माणात्मक कार्यों में लगाया जाता है और यह बची हुई शक्ति हमारी आयु को भी लंबा बनाने का कारण बनती है। लोगों में हमारे सत्याचरण के कारण हमारा सम्मान भी बढ़ता है। इससे हमें जो प्रसन्नता मिलती है, वह प्रसन्नता भी हमें अमृत देती है। अत: स्पष्ट है कि सत्य से सुख मिलता है और सुखी व्यक्ति को सत्य रूपी अमृत मिलता है। इस अमृत को पाने के लिए लोग जीवन भर तड़पते हैं। यदि यह अमृत मात्र सत्य के आचरण से, भाषण से मिल सकता है तो फिर हम सत्य की शरण में क्यों न जावें ? बस इस बात को समझ लें तो हम कल्याण मार्ग के पथिक बन जावेंगे, हमारे पर सुखों की वर्षा होने लगेगी।

शिष्य के सम्बन्ध में भी यास्काचार्य जी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जो गुरु, जो माता तथा जो पिता सत्योपदेश कर हमारे जीवन को सुखी बनाते हुए अमृत बांटने का कार्य करते हैं, शिष्य के लिए न केवल आवश्यक ही है अपितु शिष्य का यह कर्तव्य भी बन जाता है कि वह इस प्रकार के सत्योपदेश देने वाले गुरु, आचार्य, माता तथा पिता को यथोचित सम्मान भी दे। इन सब का सदा आदर करते हुए, इनकी प्रत्येक बात को प्रभु आदेश मानते हुए उसे स्वीकार ही न करे अपितु सदा-सदा के लिए उसे अपने जीवन का अंग बना ले।

अब देखें कि हमारे प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में यह संदेश दिया गया है कि गुरुजन स्वयं को इस बच्चे के पालक स्वीकार करते हुए बालक का मातृवत् पालन करते हुए बालक के मन में उसके अपने माता पिता का स्थान बनाते थे। बालक भी गुरु जन को पूरा सम्मान देते थे क्योंकि वह जानता था कि अब मेरा जो निर्माण होने वाला है, वह मेरे गुरु के द्वारा ही होने वाला है। गुरु जब वेदादि शास्त्रों की शिक्षा बड़े ही विनीत भाव से देते थे तो विद्यार्थी यही समझता था कि वह अपने परिवार में माता की गोद में है। इससे उसे अत्यंत आनंद का अनुभव होता था, उसे ऐसा लगता था मानो वह अमृत के घूंट पी रहा हो।

जब हम आज की शिक्षा को निहारते .हैं तो हम देखते हैं कि हमारे आज के समाचार पत्र इन बातों से भरे हुए हैं कि आज का विद्यार्थी अध्यापक का अपमान करना अपना अधिकार समझता है। समाचार पत्र बताते हैं कि एक विद्यार्थी ने अपने अध्यापक का अपमान कर दिया। किसी ने अपने अध्यापक को पीट दिया। किसी ने अध्यापक के वस्त्र फाड़ दिए और यहाँ तक कि अनेक बार तो यह समाचार भी मिलते हैं कि एक विद्यार्थी ने अपने अध्यापक को जान से ही मार डाला।

आज के विद्यार्थी की इस उच्छ्रिन्खलता का क्या कारण है ? जब हम इस सब पर अपनी पैनी दृष्टि डालते हैं तो हम पाते हैं कि :

१. आज वेदाधारित शिक्षा का लोप हो गया है। अनेक प्रकार की काल्पनिक कथाओं को बनाकर आज जो शिक्षा ही आती है, वह विद्यार्थी को सही मार्ग पर ले जाने के स्थान पर उलटी दिशा में ले जा रही है।

२. आज के राजनेता शिक्षा क्षेत्र में हस्तक्षेप करने लगे है। प्राचीन शिक्षा राज्याधारित न थी। इस कारण राजपुत्र तथा रंकपुत्र को सामान व्यवहार मिलता था किन्तु आज राज्याश्रित शिक्षा में राजनेताओं का दखल बढ़ जाने से जहां नियुक्ति के लिए प्रत्याशी को राजनेताओं के चरण धोने होते हैं, वहां राजनेता आज के शिक्षक को अपना नौकर मानते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का सम्मान नहीं देते, जिससे शिक्षक का सम्मान समाप्त हो गया है तथा इन राजनेताओं की संतान भी शिक्षक से गन्दा व्यवहार कराती है।

३. आज पैसे का युग है। आज किसी की प्रतिष्ठा को उसके गुणों से नहीं पैसे से तोला जाता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

भारत के इतिहास में कुछ अन्धविश्वासपूर्ण भ्रान्तियां

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य, 180 महात्मा गांधी रोड, कोलकात्ता

हमारे देश का प्राचीन इतिहास बड़ा महान् और गौरवशाली रहा है। श्री राम जैसा चरित्रवान् और मर्यादावादी, श्री कृष्ण जैसा महान कूटनीतिज्ञ, भीष्म जैसा ब्रह्मचारी, महर्षि दयानन्द जैसा मानवहितकारी व वैदिक विद्वान, आपको विश्व में ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। इसी प्रकार भारत के इतिहास का एक दूसरा कमजोर पक्ष भी है, वह यह है कि भारत के इतिहास में अन्धविश्वास पूर्ण, असम्भव, तर्क, बुद्धि व विज्ञान के विरुद्ध, प्रकृति नियम के विपरीत बातें व घटनाएं भी भरी पड़ी हैं, जिनमें कुछ घटनाओं व बातों का वर्णन यहां इस लेख में कर रहे हैं।

1. हनुमान, सुग्रीव आदि बन्दर नहीं थे-रामायण काल में हनुमान, बाली, सुग्रीव, अंगद आदि जिन्होंने श्री राम को विजय दिलवाने में अत्याधिक सहायता दी और उनका जीवन भी वीरता, बुद्धिमत्ता व स्वामी भक्ति से भरा पड़ा था, फिर भी भारत के मूर्ख इतिहासकारों ने उनको बन्दर जाति की संज्ञा दे रखी है जो बिल्कुल झूठी और मनघड़न्त बात है। सच्चाई यह है कि उस समय जो लोग जंगलों व पहाड़ों में होते थे उनको वानर जाति से सम्बोधित करते थे। वैसे वे अन्य पुरुषों की तरह केवल पुरुष ही नहीं थे बल्कि अति विद्वान, बुद्धिमान, बलवान व स्वामी भक्त भी थे। वे भी गृहस्थी रहते हुए एक दूसरे के दुःख-सुख के साथी बन कर राजा-प्रजा के रूप में नियन्त्रित रहते थे। जैसे वर्तमान में बंगाल में एक नाग जाति है। वे नाग (सांप) नहीं है, अन्य मनुष्यों की भांति मनुष्य ही हैं। इसी प्रकार उस समय में जो लोग जंगल व पर्वतों पर रहते थे उनको वानर कहा जाता था। वे भी बन्दर न होकर मनुष्य ही थे। पर नासमझ लोगों ने उस वानर जाति के लोगों को बन्दर मान लिया और उनके शरीर की बनावट भी पूंछ व बन्दर जैसा चेहरा बनाकर बन्दर का ही रूप दे दिया, परन्तु यह बिल्कुल सफेद झूठ है। हनुमान, बाली, सुग्रीव, अंगद आदि बन्दर नहीं मनुष्य ही थे। यदि बन्दर होते तो उनकी स्त्रियां भी बन्दरी होती, परन्तु बाली की धर्मपत्नी तारा को अति सुन्दर व पतिव्रता स्त्रियों में माना गया है। इससे सिद्ध होता है कि वे बन्दर नहीं बल्कि मनुष्य थे। रामायण की एक घटना से यह और भी अधिक सुस्पष्ट हो जाती है। यह घटना इसी भांति है। जब श्रीराम और लक्ष्मण, सीता जी की खोज में इधर-उधर भटक रहे थे, सुग्रीव जो हनुमान जी के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर बैठा हुआ था, उसने श्री राम और लक्ष्मण को वनवासी वेष में अपनी ओर आते देखा तो इस भय से कि कहीं ये मेरे बड़े भ्राता बाली के भेजे हुए कोई गुप्तचर तो नहीं है। ये जानकारी करने के लिए सुग्रीव ने हनुमान जी को उनके पास भेजा। जब हनुमान जी ने श्रीराम और लक्ष्मण से यहां घूमने का कारण पूछा तब हनुमान जी की पूछने की शैली व भाषा इतनी शिष्ट व शुद्ध थी जिसको सुनकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि ये व्यक्ति मुझे चारों वेदों का विद्वान जान पड़ता है कारण इससे हमारी काफी लम्बी बातचीत हुई, इन्होंने कहीं पर भी बोलने में व्याकरण की अशुद्धि नहीं की और बहुत ही शिष्ट भाषा में बातें की हैं। इनकी बातों का मेरे ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। इससे यह सिद्ध होता है कि हनुमान जी बन्दर नहीं थे बल्कि वेदों के विद्वान और एक अति सभ्य व्यक्ति थे। ऐसे वैदिक विद्वान् लोगों को बन्दर बताना, उनका ही नहीं अपना भी अपमान है।

2. हनुमान जी का बालपन में सूर्य को मुख में रख लेना-हमारे पौराणिक भाई कहते भी हैं और हनुमान चालीसा में पढ़ते भी हैं कि हनुमान जी ने बालकपन में सूर्य को मुख में रख लिया था जिससे पूरे विश्व में अन्धेरा छा गया था। यह बात बुद्धि, तर्क व विज्ञान के विरुद्ध है। ऐसी बातों से हमारे इतिहास का गौरव नहीं बढ़ता बल्कि मूर्खता और अन्धविश्वास ही जाहिर होता है। सूर्य पृथ्वी से तेरह हजार गुणा बड़ा है और पृथ्वी से कितना अधिक दूर है और कितना...गर्म है, इसलिए हनुमान जी का सूर्य को मुख में रख लेना बिल्कुल असम्भव है तथा मिथ्या है। ऐसी असम्भव बातें केवल हमारे पौराणिक भाई ही कहते हैं। ऐसी बात नहीं कि मुस्लिम भाई भी कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद साहब ने चांद के दो टुकड़े अपनी उंगली से कर दिए। ऐसी बातें पूर्णतया असम्भव हैं। इनके ऊपर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

3. कुन्ती का पुत्र कर्ण, कान से उत्पन्न हुआ था-यह भी कहा जाता है कि कर्ण, कुन्ती के कुंवारी के हुआ था और अपनी इज्जत बचाने के लिए कुन्ती ने कर्ण को एक डिब्बे में बंद करके किसी नदी में बहा दिया। वह बहता हुआ दुर्योधन के किसी सेवक के हाथ लग गया, वह उस डिब्बे को दुर्योधन के पास लाया और दुर्योधन ने कर्ण को अपने छोटे भाई के समान पालन-पोषण किया और बड़ा होने पर वह बड़ा वीर, धनुषधारी व दानवीर बना और महाभारत में दुर्योधन की तरफ से बड़ी बहादुरी से लड़ा। यह घटना सच हो सकती है। कोई असम्भव नहीं परन्तु यह कहना कि कर्ण सूर्य का पुत्र था और कुन्ती के कान से पैदा हुआ था, यह बात सरासरी झूठ है कारण प्रकृति के नियम के विरुद्ध कोई कभी भी नहीं हो सकता। हमें इस प्रकार के अन्धविश्वास को कभी नहीं मानना चाहिए।

4. सीता, राजा जनक के हल जोतते समय जमीन से निकली थी-पौराणिक भाईयों का यह कहना कि सीता, राजा जनक के हल जोतते समय जमीन में गढ़ी हुई मिली। यह बात भी सरासर झूठ मालूम होती है। इसके पीछे सच्चाई यह है कि हल के नीचे जो फाली लगती है जो ज़मीन को फाड़ती है, उस फाली को संस्कृत में सीता कहते हैं। बस! इसी से यह भ्रान्ति फैली हुई है कि सीता जमीन से निकली थी। राजा जनक को ज़मीन जोतनी पड़े, यह भी असम्भव जान पड़ता है।

5. श्रीराम ने सरूपनखां की नाक काट दी-रामायण में ऐसी घटना आती है कि जब श्रीराम, लक्ष्मण, सीता के साथ चौदह वर्ष का बनवास काट रहे थे तब रावण की बहन सरूपनखा, श्री राम की सुन्दरता देख कर उनसे विवाह करने का अपना प्रस्ताव रखा। श्रीराम ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि मेरे साथ मेरी धर्म पत्नी सीता है, पर लक्ष्मण के पास उसकी धर्मपत्नी नहीं है उससे निवेदन करो। जब वह लक्ष्मण के पास गई, तो लक्ष्मण ने उसे माता जी कहकर सम्बोधित किया और प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया। तब कहने वाले कहते हैं कि जब दोनों तरफ से इन्कार हो गया तो श्री राम ने सरूपनखां की नाक काट ली। पर यह न समझने की बात है। श्री राम जैसा आदर्श और मर्यादा का पालन करने वाला व्यक्ति किसी औरत की नाक काट ले। इसके पीछे सच्चाई यही है कि किसी की बात न मानना ही उसकी नाक काटना है। यही कहावत इस पर लागू होती है।

6. द्रौपदी के चीर हरण के समय श्री कृष्ण ने चीर को बढ़ा दिया-जैसा कि महाभारत में यह घटना आती है कि युधिष्ठिर ने दुर्योधन के मामा शकुनी के साथ जुआ खेलने में पूरा राज्य हरा दिया, तब अन्त में उसने द्रौपदी को भी दांव पर लगा दिया और हारने से द्रौपदी भी दुष्ट दुर्योधन के कब्जे में आ गई। दुर्योधन ने अपने छोटे भाई दुशासन से द्रौपदी के कपड़े उतारते हुए खेंच कर लाने को कहा। जब दुशासन द्रौपदी का चीर हरण कर रहा था और उसे निवस्त्र करना चाहता था। उस समय द्रौपदी ने श्री कृष्ण से अपनी लाज बचाने की प्रार्थना की और श्री कृष्ण ने उसका चीर इतना बढ़ा दिया कि वह दुशासन से निवस्त्र नहीं हो सकी। यह बात सुनने में तो बहुत अच्छी लगती है, पर सृष्टि नियम के विरुद्ध है। कपड़ा जितना बड़ा होगा उतना ही रहेगा। उसमें बिना जोड़े बढ़ा नहीं सकते। इसमें सच्चाई यह है दुर्योधन श्री कृष्ण के स्वभाव से परिचित था। वह जानता था कि यदि मैंने द्रौपदी को नग्न कर दिया तो श्री कृष्ण जहां कहीं पर भी होगा, वह सुनते ही आएगा और हम सबको जान से मार देगा। इसलिए दुर्योधन ने श्री कृष्ण के भय से केवल इतना ही किया कि द्रौपदी को दुशासन से खिंचवाकर सभा में ले आया, जहां दादा भीष्म, गुरु द्रौण, गुरु कृपाचार्य आदि सभी बैठे थे। उसे निवस्त्र नहीं किया। दुर्योधन को यह भी भय था कि श्री कृष्ण किसी कारणवश अब नहीं आया तो वह जब भी आएगा तभी हमें मारे बगैर नहीं रहेगा। इसलिए उसने द्रौपदी का चीर हरण करवाया ही नहीं। सभा में खिंचवाकर ज़रूर लाया। परन्तु श्री कृष्ण के अन्य भक्तों ने श्री कृष्ण को भगवान का अवतार बताने के लिए चीर बढ़ा दिया वाली असम्भव बात जोड़ दी।

मन और मानव

-ले० श्रीमती सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आ. स. माडल टाऊन, जालन्धर

मन तो सभी जीवों में होता है, किन्तु यहां हम मानव मन की ही बात कर रहे हैं। यह मन ही मनमानी करता है और इस मन को ही नियन्त्रण में रखना आवश्यक है। इन्द्रियों और शरीर को एक लय में रखना मन का कार्य है, यदि दूसरे शब्दों में व्यक्त करे तो मानव शरीर मन के उपभोग के लिए एक सांचा है जिसके अन्तर्गत सब कार्य होते हैं। स्थूल शरीर मन की बाह्य अभिव्यक्ति है।

मन वह इन्द्रिय रूप है जिससे सुख दुख का ज्ञान होता है, जो भाव मन के अनुकूल हैं, सुख है और जो भाव मन के प्रतिकूल है वह दुःख। इससे स्पष्ट है कि सुख दुःख आदि की प्रतीति मन द्वारा ही होती है-इसलिए जिस व्यक्ति की जैसी मन स्थिति होती है, उसकी परिस्थिति भी वैसी ही बन जाती है। मन का प्रत्यक्षीकरण इन्द्रियों द्वारा नहीं होता है अपितु उसके कार्यों से ही उसके अस्तित्व का ज्ञान होता है-इसलिए मन की सभी परिभाषाएं उसके कार्यों पर आधारित हैं।

मन का कोई निश्चित स्वरूप नहीं है, यह सूक्ष्म है, अणु है जो ज्ञान होने में प्रमुख हेतु हैं शरीर में रहते हुए भी शरीर से बाहर जाता है। निद्रा में भी स्वप्न रूप में और जागृत दोनों अवस्थाओं में क्रियाशील रहता है, जो इन्द्रियों का नियामक है-जो सदैव गतिशील है उसे ही मानव मन कहा जाता है।

मन के अनेक कार्य हैं जैसे संकल्प करना, विचार करना व संवेदनशील होना। मानव को चाहिए शुभ विचार वाला हो शिव संकल्प करे व दूसरों के प्रति अच्छी भावनाएं रखे व सबके दुःख को समझे।

मन का निग्रह अति आवश्यक है। मन की चंचलता शीघ्र शान्त नहीं होती-मन के निग्रह के लिए अभ्यास और वैराग्य का होना अति आवश्यक है। मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और तपस्या को मुक्ति का साधन माना गया है। मन यदि शुद्ध है तो मनुष्य की भटकन कम हो जाती है। कहा जाता है कि शुद्ध मन वाला जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है किन्तु यह केवल अनुमान है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो कठिन है-लेकिन इतना अवश्य है कि जीवन में वह सुख सन्तोष व धैर्य से रहता है। यदि मन अशुद्ध है तो मनुष्य अपने बनाए हुए बन्धनों से ही ग्रस्त रहता है व सदैव भटकता रहता है।

मन को शान्त, स्वस्थ व आनन्दय रखने के लिए रजोगुण और तमोगुण को दूर रखने की चेष्टा करनी चाहिए-काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अभिमान, मद, शोक, चिन्ता का उद्वेग, भय आदि को मन से दूर रखना चाहिए। इन सब गुणों पर लम्बी चर्चा की आवश्यकता है क्योंकि यह भी प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं-इनके अलग-अलग स्वरूप का मन पर कई प्रकार से प्रभाव होता है। इनके बिना भी कभी-कभी मन कर्म और जीवन शैली में अपूर्णता आती है-इसके लिए चिन्तन आवश्यक है।

मन की चंचलता पर काबू पाने के लिए ज्ञान, विज्ञान, धैर्य, स्मृति, समाधि के अभ्यास की नितान्त आवश्यकता है-इससे जीवन में स्थिरता शान्ति व आनन्द रहता है।

वेद में इसके लिए ''तन्मे मन: शिव-संकल्पमस्तु'' की प्रार्थना की गई है-इस सूक्ति के माध्यम से, मन शिव संकल्प वाला, शुभ विचारों वाला होवे, यह तभी संभव है, जब ईश्वर की कृपा हो, यह मन कल्याणकारी, शुभ विचारों वाला होवे, सोते जागते, प्रभु की कृपा हो- यह मन कल्याणकारी शुभ विचारों वाला होवे-सोते जागते, प्रभु की कृपा मन पर बरसती रहे।

पृष्ठ 1 का शेष-कहां भगवान्.....

भगवान् का आदेश है-'आदर्दिरो भुवना दर्दरीमि' = मैं प्रलयङ्कर बार-बार संसार का संहार करता हूँ। संहार देखकर डरकर यदि संहारक के पास मनुष्य जाएगा तो उसे पालक के रूप में पाएगा। लौकिक संहारक और उसमें यह महान् अन्तर है। लौकिक संहारक संहार-ही-संहार करने में तत्पर है। जलप्लावन के कारण ग्राम-नगर डूब रहे हैं। उसके पास कोई जाए तो वह उसे भी बहा ले जाए। किसी कारण जङ्गल में आग लग गई है, उसमें जो जाएगा, जल जाएगा, यदि जलेगा नहीं तो झुलस अवश्य जाएगा। संसार-संहारक भगवान् के पास जाने पर उसका प्यार पाएगा, संहार को प्यार में परिवर्तित पाएगा। उसका संहार निर्माण के लिए है।

पृष्ठ 2 का शेष-वेद परमेश्वर.....

इसी प्रकार अन्य दर्शनों और आर्य ग्रन्थों में वेद के ईश्वरकृत और नित्य होने के साक्ष्य मिलते हैं। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

8. इस सम्बन्ध में कम्प्यूटर में गूगल पर श्री अग्निवीर के लेख को उद्धृत करना भी विषय में और स्पष्टता लाएगा। ''ईश्वर की नित्यता के अनुरूप ही वेदों की अर्थात् ईश्वर ज्ञान की नित्यता स्वाभाविक है''

''वेदों का कलेवर (पुस्तक, पत्र, मसी आदि) जीव के स्थूल शरीर की भांति नश्वर और अनित्य है परन्तु वेद मन्त्रों के सत्यार्थ जो कि वेद की आत्मा है, वह ईश्वरीय ज्ञान शाश्वत अपरिवर्तनीय और नित्य है''

प्रलय के उपरान्त जब सृष्टि लय हो जाती है, तब ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान वर्तमान रहता है। यह ज्ञान लुप्त अवस्था में रहता है क्योंकि इसके प्रकाश के लिए कोई पदार्थ विद्यमान नहीं रहता। परन्तु ज्ञान तो प्रकृति की भांति अदृश्य अवस्था में होता है बस उसे व्यक्त करने वाला और, ग्रहण करने वाला कोई नहीं होता। जैसे बीज में छुपा हुआ अंकुर यथा समय अंकुरित हो जाता है ऐसे सृष्टि-उत्पत्ति के साथ ही ज्ञान का प्रकाश होने लगता है। जैसे सृष्टि का तिरोभाव होने के बाद वैसी ही सृष्टि का आविर्भाव होता है, बल्कुिल वैसी ही वेद ज्ञान के लुप्त होने और प्रकाशमान होने की क्रिया भी होती है। उपरोक्त प्रमाणों के पश्चात मेरे विचार में किसी प्रकार की शंका का कोई कारण नहीं बचता।

पृष्ठ 5 का शेष-गुरु शिष्य सदा.....

आज के शिक्षक को कोई सम्मानजनक वेतन नहीं मिलता। अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे सदा दो चार होना पड़ता है। इस कारण उस का विद्यार्थी, जब उसे शिक्षक कोई दंड देता है तो बोलता है कि तेरे से अधिक वेतन तो हम अपने नौकरों को देते हैं। इससे शिक्षक अपने आप को अपमानित अनुभव करता है।

४. आज के शिक्षक का अपना आचरण भी उत्तम नहीं रहा। अनेक शिक्षक शराब पीने वाले हैं। अनेक शिक्षक व्यभिचारी भी हैं। गाली गलोच तो इनमें से अनेक का दैनिक कार्य ही बन गया है। इस प्रकार के शिक्षक सम्मान पाने के स्थान पर अन्य शिक्षकों को भी बदनाम करने का कारण बनते हैं। जब विद्यार्थी अपने शिक्षक के इस दुराचरण को देखता है तथा इस दुराचरण की चर्चाएँ सुनता है तो उस के हृदय को बहुत कष्ट होता है। वह नहीं चाहता कि वह इस प्रकार के बुरे व्यक्ति से शिक्षा प्राप्त करे। अनेक बार तो कुछ विद्यार्थी इस प्रकार के शिक्षकों की आदतों का अनुसरण भी करते हुए अपने जीवन को भी नष्ट कर लेते हैं।

आज आवश्यकता है फिर से वैदिक युग लाने की। जब गुरु सत्योपदेश देने लगेंगे, जब गुरु अपने आचरण को उत्तम बनाकर सत्योपदेश देंगे तो निश्चय ही विद्यार्थी भी गुरु आदेश को समझेगा और उस आदेश का यथावत् पालन करेगा। इससे वह अपने आप को सुखी अनुभव करेगा और अमृत को प्राप्त करने की उसकी लालसा बढ़ती ही चली जावेगी। इससे जन गुरु का नाम दूर-दूर तक प्रशंसित होगा, वहां विद्यार्थी भी न केवल अपना ही कल्याण करेगा, वहां अपने माता पिता का नाम भी प्रशंसित होगा, देश उन्नति को पा कर यह भारत एक बार फिर विश्वगुरु का स्थान प्राप्त करेगा।

ऋषि निर्वाणोत्सव 5.11.15 से 10.11.15 तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

आर्य समाज मेन बाजार दीनानगर में ऋषि निर्वाणोत्सव 5.11.15 से 10.11.15 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। शोभा यात्रा 5.11.15 को श्री सत्य पाल सरल, एस. एस. गुलशन, नारायण सिंह जी आर्य महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब), जोगिन्दर पाल शास्त्री, स्वामी सदानन्द, स्वामी संतोषानन्द जी की अगवाई में रामलीला ग्राऊंड से हवन यज्ञ के पश्चात् नगर के मुख्य बाजारों से होती हुई डी. जी. खान पर समाप्त हुई जिसमें आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल दीनानगर, स्वामी विवेकानन्द स्कूल, सुमित्रा देवी स्कूल, एस. एस. एम. स्कूल झंगी सरूप दास, दयानन्द इन्ट्रनैशनल स्कूल घरोटा, एस. एस. एम. स्कूल मराड़ा गुरुकुल दयानन्द मठ दीनानगर के विद्यार्थी एवं उनके प्रिंसीपल और स्टाफ ने भाग लिया। 5.10.15 से 10.11.15 तक प्रतिदिन रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक जितेन्द्र शास्त्री, एस. एस. गुलशन और सत्यपाल सरल ने अपने भजनों और उपदेशों के माध्यम सभी आर्यजनों को मंत्र मुग्ध किया। नारायण सिंह जी के ओजस्वी भाषणों ने सभी को बहुत प्रभावित किया। ऋषि के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। आर्य समाज के नियमों की व्याख्या की। धर्म, अधर्म, स्वर्ग, नरक और यज्ञ की महिमा पर चर्चा की।

भजन गायन प्रतियोगिता-8.11.15 को प्रधान श्री धर्मेन्द्र गुप्ता जी की अध्यक्षता में भजन गायन प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें स्वामी सदानन्द अध्यक्ष दयानन्द मठ विशेष अतिथि थे। इस प्रतियोगिता में 9 स्कूलों के 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। एस. एस. गुलशन, एस. एस. एम. कालेज और शांति देवी आर्य महिला कालेज के प्राध्यापक ने निर्णायक की भूमिका निभाई। इस प्रतियोगिता में सुमित्रा देवी सी. सै. स्कूल प्रथम, एस. एस. एम. स्कूल झंगी सरूप दास द्वितीय और विवेकानन्द माडल स्कूल तृतीय स्थान पर रहे। सान्त्वना पुरस्कार आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल की वंदना, गुरूकुल के विद्यार्थी अनिल और डिपस की अदिति को दिया गया।

इन दिनों में स्त्री सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, स्वामी सर्वानन्द निर्वाणोत्सव, आर्य युवा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, मानव निर्माण सम्मेलन और नशा मुक्ति सम्मेलन, विभिन्न आर्य संस्थाओं, शांति देवी कालेज, एस. एस. एम. कालेज, आर्य स्कूल, सुमित्रा देवी स्कूल, एस. एस. एम. स्कूल मराड़ा, डिपस घरोटा, बी. एड. कालेज में करवाए गए इन दिनों में प्रिंसीपल अजमेर सिंह, वी. पी. ओहरी, प्रेम भारत, मनोरंजन ओहरी, रणजीत शर्मा, रणजीत ओहरी, गन्धर्व राज महाजन, राधेश्याम महाजन, दिनेश शास्त्री, विनय ओहरी, भारतेन्दु ओहरी, नवल महाजन, सरदारी लाल, बाबा लाल जी, रघुनाथ शास्त्री, रघुवीर सैनी एवं नगर के बहुत ही गणमान्य व्यक्ति शामिल थे। मंच का संचालन महामंत्री योगेन्द्रपाल गुप्ता ने किया। अन्तिम दिन प्रधान धर्मेन्द्र गुप्ता जी ने सभी आर्य बन्धुओं का धन्यवाद किया और दीवाली की शुभकामनाएं दीं।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर पटियाला (पंजाब) के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। तुरन्त सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं अच्छी आवास सुविधा उपलब्ध है।

-राज कुमार सिंगला, वेद प्रकाश तुली मन्त्री

आर्य समाज नवांकोट में ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषि निर्वाण दिवस 8.11.15 से 11.11.15 तक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया जिसमें प्रातः यज्ञ के ब्रह्मा डा. प्रकाश चन्द जी रहे। लक्ष्मण तिवारी, निर्मल आर्य, बाल किशन, शिवानी आर्य, शकुन्तला आर्य के भजनों से दयानन्द आर्य स्कूल के बच्चों ने खूब आनन्द लिया। पश्चात् पंडित बनारसी दास आर्य ने अपने प्रवचनों से बच्चों का मार्गदर्शन किया। 11.11.15 को पूर्णाहुति वाले दिन पंडित सत्यपाल जी पथिक, महात्मा विशोकायति जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। शिवानी आर्य, महक माधुरी, दिनेश पथिक जी ने भजनों के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। पंडित सत्यपाल पथिक जी ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कुछ अनकहे, अनसुने, संस्मरण प्रस्तुत किए। स्वामी विशोकायति जी ''जहर न पिलावी वैरिया'' भजन गा कर स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्य वक्ता डा. स्वामी मधुरानन्दा जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्त्रियों पर किए उपकारों का वर्णन किया तथा स्त्रियों को आर्य समाज के कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। पंडित बनारसी दास आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि यदि स्वामी दयानन्द जी महाराज न होते तो न आर्य समाज होता, न ही स्त्रियों के अधिकारों की कोई बात करता और न ही कोई गौ रक्षा की बात करता। श्री बाल किशन, साहब जी, सुदेश आर्य, सन्ध्या, शकुन्तला आर्य, विनोद मादान, कीमती लाल, हरजिन्द्र सिंह, धनी राम, भरत आर्य, सौरभ आर्य तथा दयानन्द आर्य स्कूल के बच्चों का विशेष सहयोग रहा। डा. प्रकाश चन्द प्रधान आर्य समाज नवांकोट ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया।

वैदिक भजन संध्या का आयोजन

सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार तथा ऋषि सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में संलग्न वैदिक सत्संग परिवार पंजाब द्वारा आयोजित वैदिक भजन सन्ध्या दिनांक 15.11.15 रविवार को रेल डिब्बा कारखाना कपूरथला के वर्कर में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुई। जिसमें आर्य जगत के वैदिक विद्वान एवं भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर) तथा सुप्रसिद्ध गजल भजन गायक श्री पंडित हरि शर्मा (चंडीगढ़) टी. वी. कलाकार चंडीगढ़ एवं दिव्या चैनल ने अपने सुमधुर भजनों से आर्य जनता का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान सरदार जी. एस. हीरा (मुख्य लेखा अधिकारी एवं वित्तीय सलाहकार रोडिक) रहे। विशेष अतिथि श्री दयाराम माली (यू. के.) सु. समाज सेवी पधारे कुन्दन लाल अग्रवाल प्रबन्ध डी. ए. कालेज जालन्धर डा. तेजपाल सिंह मंडल लेखाधिकारी (फिरोजपुर) श्री जसवीर सिंह अरोड़ा तथा रेलवे के कई उच्चाधिकारी तथा अनेकों संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. शिव दयाल माली (सीनियर मेडिकल अफसर जालन्धर) रहे। अन्त में पूज्य आचार्य देवराज जी ने पधारे सभी भक्तों को आशीर्वाद एवं सभी के लिए प्रभु से मंगलकामना की। अन्त में प्रसाद वितरण के तथा शान्ति पाठ के उपरान्त सभा विसर्जित हुई। **-नरेन्द्र कुमार सूद**

वेदवाणी

मरणशील मनुष्यों का अमरदेव ही स्तुत्य

तमध्वरेष्वीलते देवं मर्ता अमर्त्यम्।
यजिष्ठं मानुषे जने।। -ऋ० ५/१४/२

ऋषिः-आत्रेयः सुतम्भरः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-विराड्गायत्री।।

विनय-नाना प्रकार के यज्ञों में जो हम विविध कर्म करते हैं, असल में हम उन सब कर्मों द्वारा यह अमरदेव का ही पूजन करते हैं। हम मरणशील मनुष्यों को अमरदेव का ही यजन करने की आवश्यकता है। प्रत्येक यज्ञ-कर्म को अमर बनाने के लिए ही है, पर हम यज्ञों द्वारा जिस अमरदेव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव है कहां ? सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मानुष जन में है, प्रत्येक मनुष्य में 'यजिष्ठ' होकर विद्यमान है। हमें प्रत्येक मानुष में उसका यजन करना चाहिए, इसीलिए कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यों के हित के लिए होता है। यज्ञ का स्वरूप परोपकार है-एक-एक मनुष्य का हित साधन है। मनुष्यों की सेवा करना ही यज्ञ करना है। जितना हम मनुष्यों की सेवा करते हैं-मनुष्यों की पीड़ाओं और दुःखों को दूर करने के लिए निःस्वार्थ भाव से यत्न करते हैं-उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं। अग्निहोत्र द्वारा किए जाने वाले पुराने ऋतु यागादि भी आधिदैविक-देवों की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य जनता के हित के प्रयोजन से ही किए जाते थे, पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता। मनुष्यों की जिस किसी प्रकार की सेवा करने से यज्ञ नहीं हो जाता। हमें तो प्रत्येक मनुष्य में उस अमरदेव का ही यजन करना है। जिस सेवा से मनुष्य में अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा सेवा नहीं है, वह सेवा-यज्ञ नहीं है। भोग विलास की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा 'परोपकार' यज्ञ नहीं, अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों को इस प्रकार अन्न देना, रोगियों को इस प्रकार औषध देना भी जो उनकी सच्ची उन्नति में, उन्हें अमर बनाने में, बाधक होवे, यह भी यज्ञ नहीं है, अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ है जब यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही, दूसरे शब्दों में, मर्त्य से अमर बनाना है। आओ, हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करें, मनुष्य की ऐसी सेवा करने में अपने को खो देवें जो सेवा उनके अमर बनने में सहायक हो।

-वैदिक विनय से साभार

आर्य समाज मन्दिर अंधेरी पश्चिम का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी (प.) मुंबई का **29वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक गुरुवार 24 दिसम्बर से रविवार 27 दिसम्बर 2015** तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर विश्व शान्ति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान वेद प्रवक्ता **आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोतिय** होंगे।

आर्ष कन्या गुरुकुल **दाधिया (राजस्थान)** की कन्याओं द्वारा वेद पाठ एवं सुप्रसिद्ध सुमधुर **गायक श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर)** के भक्ति संगीत का आनन्द आपको प्राप्त होगा।

जो सज्जन इस यज्ञ में यजमान बनना चाहें वे अपने नाम आर्य समाज अंधेरी के कार्यालय में स्वयं पधार कर अथवा फोन नं. **26393895** पर भी लिखवा सकते हैं।

यज्ञ नित्य प्रति प्रातः 7 बजे आरम्भ होगा। यजमान अपना स्थान 6.45 तक अवश्य ग्रहण कर लें। कृपया अपने सम्मानित पत्र में समाचार प्रकाशित कराने की कृपा करें। -सधन्यवाद

गुरुकुल का आयुर्वेद महान घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।